शोध एवं स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
हंडिया पोस्टग्रेजुएट कालेज
हंडिया, इलाहाबाद

क्रमांक

दिनांक 18 NOV 2003

: : प्रमाण–पत्र : :

प्रमाणित किया जाता है कि ***आनन्द पाण्डेय*** ने वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की पी-एच०डी० (हिन्दी) उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में ***"विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य का तुलनात्मक अनुशीलन"*** विषयक शोध-प्रबन्ध विश्वविद्यालय की परिनियमावली एवं अध्यादेशों के अनुसार निर्धारित अवधि में पूर्ण किया है। इनका शोध-प्रबन्ध मौलिक एवं गवेषणापूर्ण है। मैं इस शोध-प्रबन्ध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत किये जाने की सहर्ष संस्तुति करता हूँ।

सभापति मिश्र

(डॉ० सभापति मिश्र)
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

अग्रसारित
18.11.03
प्राचार्य
हंडिया पोस्टग्रेजुएट कालेज
हंडिया-इलाहाबाद

विषयानुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	प्राक्कथन	क-च
२.	विषयानुक्रमणिका	अ-ई
३.	**प्रथम अध्याय – गीतिकाव्य का स्वरूप-विमर्श**	१-६७
	१. गीतिकाव्य : परिभाषा एवं तत्व	१-१४
	२. गीतितत्व	१४-१६
	(क) संगीतात्मकता	१६-१८
	(ख) नादतत्व	१८-१९
	(ग) छन्दविधान	१९-२०
	(घ) लयात्मकता	२०-२१
	(ङ) गेयता	२१
	(च) भावमयता	२१-२२
	(छ) वैयक्तिकता	२२
	(ज) रागात्मक अनुभूति	२३
	(झ) कल्पना प्रवणता	२३-२४
	(ञ) संक्षिप्तता	२४-२५
	(ट) प्रभावोत्पादकता	२५
	(ठ) सहज अन्तःप्रेरणा	२५-२६
	(ण) भाषा-शैली	२६
	३. गीतिकाव्य का वर्गीकरण	२६
	(क) साहित्यिक गीत	२६-२८
	(ख) लोक गीत	२८-३८
	४. संस्कृत गीतिकाव्य का काव्यशास्त्रीय आधार	३८-५४
	५. गीतिकाव्य की परम्परा (वैदिक काल से विद्यापति तक)	५५-६७
४.	**द्वितीय अध्याय – विद्यापति एवं जयदेव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	६८-१११
	(क) विद्यापति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	६८
	१. विद्यापति का जीवनवृत्त	६८
	२. जन्म स्थान और जन्मकाल	६८-७३
	३. मृत्युकाल	७३-७४
	४. विवाह एवं परिवार	७४
	५. गुरु	७५-७५

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
	६. वंशपरिचय	७५-७६
	७. आश्रयदाता	७६-८०
	८. विद्यापति : बंगाली या मैथिली	८०-८२
	९. विद्यापति की किंवदन्तियाँ	८२-८५
	१०. विद्यापति की युगीन परिस्थितियाँ	८५-९०
	११. विद्यापति की रचनाएँ	९०-९२
	(ख) जयदेव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	९२
	१. जयदेव का काल निर्णय	९२-९५
	२. जयदेव का जन्म स्थान	९५-९८
	३. जयदेव का व्यक्तित्व	९८-१०७
	४. जयदेव का कृतित्व	१०७-१११
५.	**तृतीय अध्याय – विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में भक्ति का स्वरूप**	**११२-१३९**
	(क) विद्यापति के गीतिकाव्य में भक्ति-भावना	११२-११४
	१. विद्यापति की कृष्ण भक्ति	११४-११९
	२. विद्यापति की शिवोपासना	११९-१२१
	३. विद्यापति की शक्ति-साधना	१२१-१२३
	४. विद्यापति की अन्य देवों की उपासना	१२३-१२४
	५. विद्यापति की भक्ति-भावना संबंधी विशेषता-समन्यवाद	१२४-१२५
	(ख) जयदेव के गीतिकाव्य में भक्ति-भावना	१२५
	१. भक्ति का स्वरूप	१२५-१२७
	२. वैष्णव भक्ति	१२७-१२९
	३. जयदेव की भक्ति-भावना	१२९-१३५
	(ग) जयदेव और विद्यापति की भक्ति में साम्य-वैषम्य	१३५-१३९
६.	**चतुर्थ अध्याय – विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में शृंगार**	**१४०-२३७**
	१. शृंगार का शास्त्रीय स्वरूप	१४०-१४२
	२. विद्यापति की शृंगार भावना	१४२-१४३
	३. विद्यापति का संयोग-शृंगार वर्णन	१४३-१५३
	४. विद्यापति का नख-शिख चित्रण	१५३-१६०
	५. नायिका भेद	१६१-१६८
	६. नायक भेद	१६८-१७१

क्रम		विषय	पृष्ठ संख्या
	७.	मिलन प्रसंग	१७१-१७३
	८.	विद्यापति का वियोग - शृंगार वर्णन, षड़ऋतु व बारहमासा	१७३-१७९
	९.	पूर्वराग, मान, अभिसार, वियोग-दशाएँ	१८०-१९६
	१०.	जयदेव के गीतिकाव्य में शृंगार	१९६
	११.	संयोग शृंगार का चित्रण	१९६-२०४
	१२.	नायिका भेद	२०४-२१०
	१३.	नायक भेद	२१०-२१४
	१४.	जयदेव का वियोग वर्णन	२१४-२२४
	१५.	विद्यापति एवं जयदेव के शृंगार वर्णन की तुलना	२२४-२३७
७.	**पंचम अध्याय -विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में कृष्ण एवं राधा का स्वरूप**		**२३८-२८७**
	१.	कृष्ण का स्वरूप-विकास	२३८-२५०
	२.	विद्यापति के गीतिकाव्य में कृष्ण का स्वरूप	२५०-२५८
	३.	जयदेव के गीतिकाव्य में कृष्ण	२५८-२५९
	४.	राधा का स्वरूप-विकास	२६०-२६९
	५.	विद्यापति की राधा	२६९-२७६
	६.	जयदेव की राधा	२७७-२७८
	७.	विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में वर्णित कृष्ण एवं राधा के स्वरूप की तुलना	२७८-२८७
८.	**षष्ठ अध्याय -विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में प्रकृति-चित्रण**		**२८८-३२०**
	१.	विद्यापति के काव्य में प्रकृति	२८८-२८९
	२.	आलम्बनगत प्रकृति-वर्णन	२८९
		(क) ऋतु	२८९-२९४
		(ख) पशु-पक्षी	२९४-२९५
		(ग) वन-उपवन	२९५
		(घ) नगर-ग्राम	२९५-२९६
		(ङ) सर-सरिता	२९६
		(च) उत्सव-महोत्सव	२९६-२९७

क्रम		विषय	पृष्ठ संख्या
	३.	उद्दीपन प्रकृति-वर्णन	२९७-३००
	४.	आलंकारिक रूप में प्रकृति-निरूपण	३००-३०१
	५.	पृष्ठभूमि या वातावरण निर्माण के रूप में प्रकृति	३०१
	६.	मानवीयकरण रूप में प्रकृति-वर्णन	३०१-३०२
	७.	प्रतीक विधान के रूप में प्रकृति-वर्णन	३०२
	८.	प्रकृति-वर्णन की साहित्यिक रूढ़ियाँ और कवि प्रसिद्धियाँ	३०२
	९.	आंगिक सौन्दर्याभिव्याक्ति के माध्यम के रूप में प्रकृतिवर्णन	३०२-३०३
	१०.	प्रकृति की शास्त्रीय विवेचना	३०३-३०६
	११.	जयदेव का प्रकृति-चित्रण	३०६
		(क) आलम्बन रूप	३०६-३०८
		(ख) उद्दीपन रूप	३०८-३१३
		(ग) अलंकारिक रूप	३१३-३१४
	१२.	विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में प्रकृति एवं जीवन का तुलनात्मक विवेचन	३१४-३२०
९.	**सप्तम अध्याय -**	**विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में अभिव्यंजना शिल्प**	**३२१-३९५**
	१.	विद्यापति के काव्य का अभिव्यंजना शिल्प	३२१
		(क) भाषा-सौन्दर्य	३२१-३२४
		(i) सफल भावाभिव्यक्ति	३२४-३२५
		(ii) चित्रमयता	३२५
		(iii) अनुरणनात्मकता	३२६
		(iv) संगीतात्मकता	३२६
		(ख) अलंकार-योजना	३२६-३३०
		(ग) अन्योक्ति-विधान	३३०-३३१
		(घ) बिम्ब-विधान	३३१-३३५
		(ङ) प्रतीक-योजना	३३५-३३६
		(च) शब्द की अर्थशक्तियाँ	३३६-३३८
		(ज) कहावतों का प्रयोग	३३८-३३९

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
२.	जयदेव के काव्य का अभिव्यंजना सौष्ठव	३३९
	(क) भाषा-शैली	३३९-३४६
	(ख) रीति निरूपण	३४६-३५०
	(ग) वृत्ति विवेचन	३५०-३५४
	(घ) गुण विवेचन	३५४-३५९
	(ङ) अलंकार विवेचन	३५९-३७९
	(च) छन्द विवेचन	३७९-३८६
	(छ) संगीत-योजना	३८६-३९५
१०.	**उपसंहार - विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य का समग्र मूल्यांकन**	**३९६-४०७**
११.	**सहायक पुस्तकों की सूची**	**४०८-४१९**
	(क) संस्कृत-ग्रन्थ	४०८-४०९
	(ख) हिन्दी-ग्रन्थ	४१०-४१६
	(ग) अँगरेजी-ग्रन्थ	४१७-४१९
	(घ) पत्र-पत्रिकाएँ	४१९

प्राक्कथन

हिन्दी गीतिकाव्य प्ररम्परा मूलतः संस्कृत से विकसित हुई है। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का गीतिकाव्य विशेष रूप से संस्कृत की उसी परम्परा से प्रभावित हुआ है। गीतिकाव्य की यह परम्परा मूलतः विद्यापति से प्रभावित रही है क्योंकि विद्यापति को अपने युग में जो व्यापक जनाधार मिला है, उससे मध्यकाल के कृष्ण-भक्त कवियों का अप्रभावित रहना सम्भव नहीं था। विद्यापति का सम्पूर्ण गीतिकाव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। वे हिन्दी गीतिकाव्य के प्रवर्तक कवि हैं। इनके छंद लघु आकार के होने के क़ारण गेयपद में हें। सहज सरल भाषा, भावावेग, वैयक्तिकता और संगीतात्मकता गीतिकाव्य के प्रमुख आधार हैं। इस काव्य विधा की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। भारतीय साहित्य का प्राचीनतम रूप वेद स्वयं अपने में गेय है। संस्कृत वाङ्मय में गीतिकाव्य की परम्परा बहुत विस्तृत और प्राचीन है। परन्तु गेयपद इससे भिन्न विधा है। गेय पदों में भावावेश, वैयक्तिकता, सहज सरलता आदि गुणों के साथ स्थायी और अन्तरा भी इसमें रहते हैं। गेय पदों की परम्परा जयदेव के 'गीतगोविन्द' से प्रारम्भ होती है। विद्यापति ने जयदेव की परम्परा में स्थायी अन्तरा वाले पदों को रखा है। उनकी कला गेय पदों के सर्वथा अनुकूल रही है। विद्यापति के पदों में शृंगार के कोमल भाव है। उनमें यौवनोद्दीप्त सौन्दर्य उनकी प्रेमाह्लादित चेष्टाएँ, मिलन, अभिसार, सुरत, विरह आदि का बिम्बात्मक चित्रण है। जेसे कोमलकान्त सरस, विरह आदि का बिम्बात्मक चित्रण है। जैसे कोमलकान्त सरस भाव हैं, वैसी ही कोमलकान्त पदावली का भाषा-प्रयोग हुआ है। विद्यापति के पदों में अनुभूति और अभिव्यक्ति में पार्थक्य नहीं है। विद्यापति ने लोकभाषा द्वारा लोकगीतों में प्रेम-शृंगार की प्रौढ़ अभिव्यक्ति देकर गेय पदों की बड़ी पुष्ट परम्परा प्रारम्भ की।

विद्यापति ने संस्कृत के सभी गीत काव्यकारों के भावों क़ो अपनाया है, किन्तु उन पर सबसे अधिक प्रभाव जयदेव का पड़ा है। उन्होंने जयदेव की शैली ही नहीं, भावों एवं अलंकारों तक को ज्यों का त्यों ले लिया है। विद्यापति के कृष्णभक्तिपरक गीतिकाव्य के सन्दर्भ में जयदेव का नाम स्वतः सम्पृक्त है। वस्तुतः

मध्यकालीन कृष्णभक्ति काव्य के गेयतत्व की पृष्ठभूमि विद्यापति एवं जयदेव से जुड़ी है और इस दृष्टि से जयदेव भाषान्तर के बावजूद हिन्दी गीतिकाव्य परम्परा की प्रथम पंक्ति में आते हैं। उन्होंने संस्कृत भाषा के जिस रूप को ग्रहण किया है, वह सरलीकरण की ओर है और उसी क्रम में काव्यविधान भी परम्परा से हटकर नये गीतिकाव्य के उदय का संकेत देता है। इसीलिए जयदेव हिन्दी साहित्य में अधिक समादृत है। इस प्रकार जब हिन्दी गीतिकाव्य के विकास का प्रश्न उठता है तो जयदेव और विद्यापति के नाम परम्परा की दृष्टि से प्रथमावृत्ति के रूप में आते हैं, जबकि दोनों कवि परवर्ती हिन्दी काव्यभाषा से सर्वथा पृथक् लोकभाषा या संस्कृत से सम्पृक्त हैं।

विद्यापति एवं जयदेव ने कृष्णकथा को अपने गीतिकाव्य का आधार माना है और कृष्ण के शृंगारी रूप को ही मुख्य रूप से वर्णित किया है। विद्यापति एवं जयदेव दोनों के काव्य में राधा का व्यक्तित्व गोपियों की पंक्ति से उभरकर स्वतंत्र अस्तित्व बनाने में समर्थ हुआ है तथा दोनों के काव्य में कृष्ण के ईश्वरत्व की अपेक्षा उनके लोकरंजक रूप का चित्रण हुआ है। विद्यापति एवं जयदेव दोनों कवियों ने कृष्ण के लोकव्यापी माधुर्यभाव से अभिमंडित चरित्र को व्यंजित किया है। इसके साथ ही विद्यापति एवं जयदेव ने भाषा की दृष्टि से कोमलकान्त पदावली और गेयता को अनिवार्य माना है।

इा प्रकार विद्यापति एवं जयदेव हिन्दी गीतिकाव्य परम्परा के प्रवर्तक हैं। जयदेव मूलतः संस्कृत के कवि और आचार्य है, किन्तु उनकी अन्यतम् विशेषता यह है कि उन्होंने संस्कृत काव्यभाषा के क्षेत्र में परम्परा को तोड़कर जनरूचि को महत्व दिया है। इस प्रकार विद्यापति ने लोकभाषा को पुरस्सर किया है और जयदेव ने साहित्यिक भाषा को लोक के निकट पहुँचाया है।

विद्यापति एवं जयदेव की ये समानताएं दोनों कवियों के तुलनात्मक अध्ययन की प्रेरणा देती हैं। विशेषतः हिन्दी साहित्य की गीतिपरम्परा के उन्मेष को सही अर्थों में स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक था कि दोनों कवियों के गीतिकाव्य का तुलनात्मक परिशीलन किया जाय। यही इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य है।

शोध-प्रबन्ध की सामग्री को सात अध्यायों में विभाजित करके यह शोध प्रबन्ध पूरा किया गया है। शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में गीतिकाव्य के स्वरूप-विमर्श पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। गीति के विविध तत्वों के मीमांसा तथा गीति-काव्य का वर्गीकरण प्रस्तुत करते हुए भारतीय गीति-काव्य की परम्परा पर विस्तार से विचार किया गया है।

द्वितीय अध्याय में विद्यापति एवं जयदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का आकलन किया गया है। इन कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व निर्धारण में युगीन परिस्थितियों तथा प्रचलित किंवदन्तियों का सहारा लिया गया है तथा उभय कवियों की कृतियों का तलस्पर्शी विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय में विद्यापति एवं जयदेव के गीति-काव्य में निहित भक्ति के स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है दोनों ही कवियों की भक्ति-भावना में निहित कृष्णभक्ति, शिवोपासना एवं शक्ति-उपासना का मूल्यांकन किया गया है और दोनों ही कवियों की भक्ति में साम्य और वैषम्य पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय में विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य में उपलब्ध श्रृंगारिक भावना पर विचार किया गया है। श्रृंगार-निरूपण में नखशिख-चित्रण, नायक-नायिका भेद, मिलन-प्रसंग, षड़ऋतु, बारहमासा तथा वियोग की विभिन्न दशाओं पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय में विद्यापति एवं जयवेद के गीतिकाव्य में कृष्ण और राधा के स्वरूप की प्रस्तुति है। राधा-कृष्ण गीतिकाव्य के आधार रहे हैं। दोनों ही कवियों के काव्य मेंराधा-कृष्ण की लीलाओं का सरस वर्णन इस अध्याय की प्रमुख विशेषता है।

शोध प्रबन्ध का षष्ठ अध्याय विद्यापति एवं जयदेव के प्रकृति-चित्रण से सम्बन्धित है। दोनों ही कवियों की प्रकृति का आलम्बन, उद्दीपन, आलंकारिक, पृष्ठभूमि तथा मानवीकरण के रूप में प्रकृति का उपयोग किया है और साहित्यिक रूढ़ियों तथा आंगिक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रकृति का सहारा लिया हे। सप्तम अध्याय में विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य के अभिव्यंजना शिल्प पर

विचार किया गया है तथा दोनों ही कवियों के भाषा-सौन्दर्य एवं अलंकार योजना, बिम्ब विधान, छंद योजना, प्रतीक का विवेचन प्रस्तुत है। उपसंहार में विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य का तुलनात्मक अनुशीलन का समग्र मूल्यांकन है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध विद्यापति एवं जयदेव के गीतिकाव्य पर सर्वथा नवीन दृष्टिकोण से विचार किया गया है। इस आधार पर यह शोध-प्रबन्ध नितान्त मौलिक एवं गवेषणापूण है। शोध-प्रबन्ध वैज्ञानिक शोध-प्रक्रिया के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह शोध-प्रबन्ध हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान एवं समीक्षक डॉ० सभापति मिश्र के कुशल निर्देशन में प्रस्तुत किया गया है। डॉ० मिश्र जी के सत्प्रयास, सविधि निर्देशन एवं सतत् प्रोत्साहन के परिणाम स्वरूप यह अनुष्ठान निर्धारित अवधि में पूर्ण हो सका है। विषय-निर्धारण से लेकर प्रबन्ध की प्रस्तुति तक गुरुवर मिश्र जी से स्नेह और आशीष प्राप्त हुआ है, इसके लिए मैं उनका चिर ऋणी हूँ- 'क्या लै गुरु संतोषिए हौंस रही मनमाँहि।'

शोध-प्रबन्ध के विषय-निर्धारण में हिन्दी के जिन मूर्धन्य विद्वानों से सहयोग और परामर्श प्राप्त हुआ है उनमें डॉ० किशोरी लाल गुप्त, डॉ० मोहन अवस्थी, डॉ० भवदेव पाण्डेय तथा डॉ० सुरेश चन्द्र शर्मा प्रमुख हैं। मैं इन विद्वानों के श्रीचरणों में प्रणाम निवेदित करते हुए अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अन्य गुरूजनों में डॉ० रघुराज सिंह (प्राचार्य), डॉ० बेनी बहादुर सिंह, डॉ० भोलानाथ मिश्र, डॉ० अशोक कुमार सिंह, डॉ० रणविजय सिंह, डॉ० दिग्विजय सिंह तथा डॉ० विजय बहादुर सिंह के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी विशेष कृपा तथा उत्साह वर्धन से ही यह अनुसंधान निर्धारित अवधि में पूर्ण हो सका है।

इस अनुष्ठान में हमारे अनेक मित्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभयी है, जिनमें डॉ० संजीव कुमार सिंह, डॉ० अजय कुमार श्रीवास्तव, डॉ० अनुपम शुक्ल एवं डॉ० ममता मिश्र प्रमुख हैं। मैं इनके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ।

शोध-प्रबन्ध की सामग्री संकलित करने में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग मागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, महाविद्यालय पुस्तकालय तथा

अपने निर्देशक के निजी पुस्तकालय से बड़ी सहायता मिली है। मैं इन सब के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति विनीत भाव से नमन करता हूँ। मैं अपने पितामह श्रीयुत् पं० रामलखन पाण्डेय, बड़े पिताश्री हरिश्चन्द्र पाण्डेय, पिताश्री रामचन्द्र पाण्डेय (प्रधानाचार्य), चाचाश्री गिरीश चन्द्र पाण्डेय (वरिष्ठ प्रबन्धक एन०टी०पी०सी०, बीजपुर, सोनभद्र), श्री सतीशचन्द्र पाण्डेय, अनुज डॉ० अनिल पाण्डेय, अतुल पाण्डेय एवं आलोक पाण्डेय का भी हृदय से आभारी हूँ, जिनकी सद्भावना से यह महान्कार्य पूर्ण हो सका है। मेरा यह अनुष्ठान उनकी प्रसन्नता का कारण होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

एक बार मैं पुनः अपने गुरुजनों, मित्रों एवं परिवारजनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

आनन्द पाण्डेय

(आनन्द पाण्डेय)

ग्राम – जुड़ई नगर
पोस्ट – पृथ्वीपुर (हंडिया)
जिला – इलाहाबाद (उ०प्र०)